IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper ©2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group-I) Journal Volume 12 , Iss1, 2023

चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिले में ग्रामीण आजीविका पर तसर रेशम उत्पादन का आर्थिक प्रभाव

सुरेंद्र पंढरीनाथ बोरडे प्रा. डॉ. जे. एम. काकडे

शोधकर्तामार्गदर्शक

विवेकानन्द महाविद्यालय अनुसंधान केन्द्र, प्राचार्य , कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय

भद्रावती, जिला-चंद्रपुर तुकूम, चंद्रपुर, जिला-चंद्रपुर

8766893602, 97652479 15

Suryaborde2785@gmail.com

सारांश:

यह अध्ययन भारत के महाराष्ट्र के चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिले में ग्रामीण आजीविका पर तसर रेशम उत्पादन के आर्थिक प्रभाव की जांच करता है। तसर रेशम उत्पादन, एक वन-आधारित रेशम उत्पादन गतिविधि, इन क्षेत्रों में हाशिए पर और आदिवासी समुदायों के लिए आय एवं रोजगार का एक प्रमुख स्रोत बनकर उभरा है। सर्वेक्षण, साक्षात्कार और द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण से जुड़े मिश्रित-विधि दृष्टिकोण के माध्यम से, यह पत्र यह पता लगाता है कि तसर रेशम उत्पादन घरेलू आय, रोजगार सृजन और सामाजिक सशक्तीकरण में कैसे योगदान देता है। निष्कर्ष बताते हैं कि तसर रेशम उत्पादन ग्रामीण परिवारों के आय स्तर को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाता है, मौसमी रोजगार प्रदान करता है और विशेष रूप से महिलाओं और आदिवासी समूहों के लिए कौशल विकास को बढ़ावा देता है। यह शोध संसाधन-निर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक सशक्तीकरण के लिए एक उपकरण के रूप में तसर रेशम उत्पादन की क्षमता के बारे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

मुख्य शब्द:तसर रेशम उत्पादन, ग्रामीण आजीविका, आर्थिक प्रभाव, चंद्रपुर, गढ़चिरौली, आय सृजन, रोजगार, आदिवासी समुदाय, ग्रामीण विकास

परिचय:

रेशम उत्पादन के लिए रेशम के कीड़ों को पालने की कला और विज्ञान, रेशम उत्पादन, भारत में लंबे समय से एक महत्वपूर्ण पारंपरिक उद्योग रहा है। वैश्विक स्तर पर सबसे बड़े रेशम उत्पादकों में से एक के रूप में, भारत का रेशम

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper ©2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group-I) Journal Volume 12 , Iss1, 2023

उत्पादन क्षेत्र ग्रामीण रोजगार और आर्थिक विकास में एक आवश्यक योगदानकर्ता है, खासकर उन क्षेत्रों में जहां वैकल्पिक आय स्रोत सीमित हैं। यह उद्योग न केवल एक विविध रेशम उत्पादन बाजार का समर्थन करता है - जिसमें शहतूत, एरी, मुगा और तसर रेशम शामिल हैं - बल्कि भारत की निर्यात अर्थव्यवस्था में भी योगदान देता है। रेशम उत्पादन की ग्रामीण-आधारित प्रकृति इसे छोटे पैमाने के किसानों और हाशिए के समुदायों के लिए सुलभ बनाती है, जिससे वे अपने तत्काल पर्यावरण के भीतर स्थायी आर्थिक गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं।

भारत में प्रचलित विभिन्न प्रकार के रेशम उत्पादन में, तसर रेशम उत्पादन अपनी वन-आधारित पालन प्रक्रिया के कारण एक विशिष्ट स्थान रखता है। तसर रेशम, जो अपनी समृद्ध बनावट और प्राकृतिक आकर्षण के लिए जाना जाता है, मुख्य रूप से रेशम के कीड़ों के लार्वा से प्राप्त होता है जो विशिष्ट वन वृक्षों, जैसे अर्जुन (टर्मिनलिया अर्जुन) और आसन (टर्मिनलिया टोमेंटोसा) पर फ़ीड करते हैं। यह वन-निर्भर उत्पादन प्रक्रिया तसर रेशम उत्पादन को ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों के लिए अत्यधिक उपयुक्त बनाती है, विशेष रूप से वे जहां समृद्ध वन पारिस्थितिकी तंत्र हैं। शहतूत रेशम उत्पादन के विपरीत, तसर रेशम उत्पादन वन क्षेत्रों के पारिस्थितिक संतुलन पर निर्भर करता है और कम लागत वाले अदानो से लाभान्वित होता है।

तसर रेशम उत्पादन में आदिवासी समुदायों की भागीदारी उन्हें आजीविका का एक स्रोत प्रदान करती है इन जिलों में आदिवासी आबादी और ग्रामीण समुदायों की उच्च सांद्रता है जो पारंपरिक रूप से जीविका के लिए कृषि, वानिकी और अन्य प्राकृतिक संसाधन-आधारित गतिविधियों पर निर्भर हैं। प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता के बावजूद, चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिले सीमित औद्योगिक विकास और उच्च गरीबी दर के साथ आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इसलिए तसर रेशम उत्पादन एक आशाजनक विकल्प के रूप में उभरा है, जो इन समुदायों को एक पूरक आय स्रोत प्रदान करता है जो वन संसाधनों पर उनकी निर्भरता के साथ संरेखित होता है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिले में ग्रामीण आजीविका पर तसर रेशम उत्पादन के आर्थिक प्रभाव का विश्लेषण करना है। आय सृजन, रोजगार सृजन और सामाजिक सशक्तीकरण में तसर रेशम उत्पादन की

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper ©2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group-I) Journal Volume 12 , Iss1, 2023

भूमिका की जांच करके, यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि यह क्षेत्र इन ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक विकास में कैसे योगदान देता है। इसके अतिरिक्त, शोध इन जिलों में तसर रेशम उत्पादन के सामने आने वाली चुनौतियों का पता लगाएगा और सतत ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका को बढ़ाने के तरीके सुझाएगा। इस अध्ययन के माध्यम से, अनुसंधानकर्ता का उद्देश्य ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान करना है जो ग्रामीण भारत में तसर रेशम उत्पादन के लाभों को अनुकूलित करने के लिए नीतियों और पहलों को सूचित कर सके।

अनुसंधान का उद्देश्य:

१) महाराष्ट्र के चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिलों में ग्रामीण आजीविका पर तसर रेशम उत्पादन के आर्थिक प्रभाव का आकलन करना।

२) रेशम उत्पादन में शामिल ग्रामीण परिवारों, विशेष रूप से आदिवासी और हाशिए के समुदायों के बीच आय के स्तर को बढ़ाने में तसर रेशम उत्पादन की भूमिका का विश्लेषण करना।

३) मौसमी और अंशकालिक काम के अवसरों सहित तसर रेशम उत्पादन उद्योग द्वारा उत्पन्न प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार की सीमा का आकलन करना।

४) ग्रामीण और आदिवासी समुदायों के भीतर कौशल विकास, महिलाओं के सशक्तीकरण और सामाजिक समावेश जैसे व्यापक सामाजिक-आर्थिक लाभों की जांच करना।

५) अध्ययन क्षेत्रों में तसर रेशम उत्पादन के विकास और स्थिरता को प्रभावित करने वाली पर्यावरणीय, आर्थिक और संस्थागत चुनौतियों का पता लगाना।

साहित्य समीक्षा:

१) **भट्टाचार्य, आर., और देवी, यू. (२०१३):**पूर्वी भारत में तसर रेशम उत्पादन के प्रभाव पर अपने अध्ययन में, भट्टाचार्य और देवी ने ग्रामीण परिवारों को रेशम उत्पादन के आर्थिक लाभों की जांच की, जिसमें रोजगार सृजन और आय वृद्धि पर ध्यान केंद्रित किया गया। उन्होंने पाया कि तसर रेशम उत्पादन रोजगार के अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, खासकर ग्रामीण समुदायों में महिलाओं के लिए, जो गरीबी को कम करने और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करता है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper ©2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group-I) Journal Volume 12 , Iss1, 2023

२) **सुंदरम, एस. आर., और कुमार, वी. (२०१५):**यह शोध भारत के आदिवासी क्षेत्रों में तसर रेशम उत्पादन के सामाजिक और आर्थिक लाभों की जांच करता है। लेखक इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि रेशम उत्पादन श्रम-प्रधान है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार को बढ़ाता है, आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा देता है। उनके निष्कर्ष बताते हैं कि तसर रेशम उत्पादन हाशिए पर पड़े किसानों के लिए एक मूल्यवान पूरक आय स्रोत के रूप में कार्य करता है, जो फसल विफलता और मौसमी रोजगार उतार-चढ़ाव के खिलाफ लचीलापन प्रदान करता है।

३) **शर्मा, एम., और सिंह, ए. (२०१८):**ग्रामीण समुदायों पर तसर और शहतूत रेशम उत्पादन के आर्थिक प्रभावों के अपने तुलनात्मक विश्लेषण में, शर्मा और सिंह आय के स्तर, रोजगार और सामाजिक प्रभाव का आकलन करते हैं। उनके अध्ययन से पता चलता है कि शहतूत रेशम उत्पादन जहाँ तेजी से रिटर्न देता है,वहीं तसर रेशम उत्पादन कुछ क्षेत्रों में अधिक टिकाऊ है और आदिवासी क्षेत्रों की पारिस्थितिक विशेषताओं के साथ इसके संरेखण के कारण महत्वपूर्ण आर्थिक लचीलापन प्रदान करता है।

४) **गुप्ता, एन., और चौधरी, आर. (२०२०):**यह अध्ययन दूरदराज के क्षेत्रों में तसर रेशम उत्पादन को बढ़ावा देने में सरकारी हस्तक्षेप और नीति समर्थन की भूमिका पर गहराई से विचार करता है। गुप्ता और चौधरी (2020) चर्चा करते हैं कि कैसे सरकारी सब्सिडी, वित्तीय सहायता और विपणन समर्थन ने तसर किसानों की आय और समग्र आजीविका को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। अध्ययन ग्रामीण क्षेत्रों में तसर रेशम उत्पादन की स्थिरता को बढ़ाने के लिए निरंतर नीति समर्थन की सिफारिश करता है।

५) **सिन्हा, पी., और रॉय, डी. (२०२३):**सिन्हा और रॉय द्वारा किए गए सबसे हालिया अध्ययन में उत्पादन से लेकर बाजार वितरण तक तसर रेशम उत्पादन की मूल्य श्रृंखला की जांच की गई है। वे मूल्य श्रृंखला के प्रत्येक चरण का मूल्यांकन करते हैं, प्रत्येक स्तर पर आर्थिक लाभों की पहचान करते हैं, विशेष रूप से ग्रामीण उत्पादकों के लिए रोजगार सृजन और आय में सुधार के संदर्भ में। लेखकों का सुझाव है कि मूल्य श्रृंखला को अनुकूलित करने से तसर उत्पादकों के लिए उचित मूल्य निर्धारण और बेहतर बाजार

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper ©2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group-I) Journal Volume 12 , Iss1, 2023

पहुंच सुनिश्चित करके ग्रामीण आजीविका को और बेहतर बनाया जा सकता है।

ये अध्ययन सामूहिक रूप से रोजगार सृजन से लेकर आय विविधीकरण और सामाजिक समावेशन तक ग्रामीण आजीविका के लिए तसर रेशम उत्पादन के आर्थिक लाभों को रेखांकित करते हैं। वे ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं पर इस क्षेत्र के सकारात्मक प्रभाव को बढ़ाने में सरकारी सहायता, टिकाऊ प्रथाओं और कौशल विकास की भूमिका को भी इंगित करते हैं।

शोध पद्धति:

यह अध्ययन चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिलों में तसर रेशम उत्पादन के आर्थिक प्रभाव का आकलन करने के लिए मिश्रित-विधि दृष्टिकोण का उपयोग करता है। यह एक स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग करके मात्रात्मक डेटा को गुणात्मक अंतर्दृष्टि के साथ जोड़ता है। आँकड़ों के संग्रह विधियों में प्रश्नावली, साक्षात्कार और सरकारी एजेंसियों और गैर सरकारी संगठनों से द्वितीयक आँकड़े शामिल हैं।

चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिले में ग्रामीण आजीविका पर तसर रेशम उत्पादन का आर्थिक प्रभाव:

चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिले में तसर रेशम उत्पादन का एक समृद्ध इतिहास है, जो वन-आधारित प्रथाओं और देशी अर्जुन एवं आसन के पेड़ों पर आधारित है। ऐतिहासिक रूप से, तसर रेशम उत्पादन एक कारीगरी प्रथा थी जो पीढ़ियों से चली आ रही थी। हालाँकि, बढ़ती सरकारी रुचि और हस्तक्षेप के साथ, इसने काफी वृद्धि देखी है, एक छोटे पैमाने की गतिविधि से औपचारिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों, वित्तपोषण तक पहुँच और बेहतर बाजार संपर्क के साथ एक संरचित उद्योग में बदल गया है। उत्पादन प्रक्रिया रेशमकीट पालन से शुरू होती है, जहाँ स्थानीय किसान और वनवासी अर्जुन एवं आसन के पेड़ों पर रेशम के कीड़ों की खेती करते हैं, उन्हें गुणवत्तापूर्ण कोकून बनाने के लिए सावधानीपूर्वक प्रबंधित करते हैं। एक बार जब रेशम के कीड़े परिपक्व हो जाते हैं, तो कोकून की कटाई और प्रसंस्करण किया जाता है, जिसके लिए विशिष्ट कौशल और बुनियादी ढाँचे की आवश्यकता होती है। कोकून भंडारण, गुणवत्ता नियंत्रण और सुखाने की बेहतर सुविधाओं ने क्षेत्र की उत्पादन दक्षता में योगदान दिया है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper ©2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group-I) Journal Volume 12 , Iss1, 2023

रेशम कताई और बुनाई कोकून को रेशम के धागे में बदल देती है, जिससे उच्च मांग वाले तसर रेशम कपड़े का उत्पादन होता है। हाल ही में आधुनिक करघे और कौशल संवर्धन कार्यक्रमों की शुरूआत के साथ बुनाई चरण का विस्तार हुआ है। तसर रेशम उत्पादन का समर्थन करने वाले बुनियादी ढांचे में कोकून प्रसंस्करण, गुणवत्ता परीक्षण केंद्र और गोदाम की सुविधाएं शामिल हैं। क्षेत्रीय विकास निधि ने भी लगातार उत्पादन गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए पालन केंद्रों और कोल्ड स्टोरेज की स्थापना का समर्थन किया है।

तसर रेशम उत्पादन में सरकारी सहायता महत्वपूर्ण है, जो उत्पादकता बढ़ाने के लिए योजनाएं और सब्सिडी प्रदान करती है। कपड़ा मंत्रालय के तहत कार्यक्रम प्रशिक्षण, सामग्री और आधुनिक पालन प्रथाओं के लिए संसाधन प्रदान करते हैं, जबकि नीतियां सूक्ष्म ऋण और सब्सिडी के माध्यम से वित्तीय सहायता को बढ़ावा देती हैं। गैर सरकारी संगठन और सहकारी समितियां प्रशिक्षण और बाजार पहुंच प्रदान करके तसर रेशम उत्पादन में सुधार के लिए सक्रिय रूप से काम करती हैं। पालन तकनीक, कोकून प्रसंस्करण और रेशम बुनाई में प्रशिक्षण पहल उत्पादन की गुणवत्ता बनाए रखने और श्रमिकों को सशक्त बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिले में तसर रेशम उत्पादन उद्योग न केवल एक आर्थिक गतिविधि है, बल्कि एक सांस्कृतिक अभ्यास भी है जो इसमें शामिल समुदायों की पारंपरिक जीवन शैली के साथ संरेखित है। तसर रेशम उत्पादन चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिले में एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है, जो ग्रामीण समुदायों को आय सृजन, रोजगार के अवसर और सामाजिक-आर्थिक विकास प्रदान करती है। यह परिवारों के लिए एक स्थिर और अनुमानित आय स्रोत प्रदान करता है, विशेष रूप से आदिवासी एवं आर्थिक रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों के बीच। उद्योग की श्रम-गहन प्रकृति पर्याप्त रोजगार के अवसर प्रदान करती है, क्योंकि इसके उत्पादन चक्र के दौरान इसे निरंतर कार्यबल की आवश्यकता होती है। श्रम की यह मांग चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिले जैसे क्षेत्रों में विशेष रूप से फायदेमंद है, जहाँ पारंपरिक खेती के अलावा रोजगार के विकल्प सीमित हैं।

तसर रेशम उत्पादन महिलाओं को सशक्त बनाता है और हाशिए पर रहने वाले एवं आदिवासी समूहों को उनकी पारंपरिक जीवन शैली से जुड़ी आय-उत्पादक

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper ©2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group-I) Journal Volume 12 , Iss1, 2023

गतिविधियों में एकीकृत करके सामाजिक समावेश को बढ़ावा देता है। कौशल विकास और ज्ञान हस्तांतरण उद्योग के आवश्यक पहलू हैं, जिसमें मेजबान पौधे प्रबंधन, रोग नियंत्रण और गुणवत्ता नियंत्रण पर प्रशिक्षण से चिकित्सकों के लिए तकनीकी ज्ञान और जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है।

सतत आर्थिक विकास और पारिस्थितिक लाभ भी तसर रेशम उत्पादन के महत्वपूर्ण लाभ हैं। यह उन सतत प्रथाओं पर निर्भर करता है जो वन पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करते हैं, देशी मेजबान पौधों के संरक्षण को बढ़ावा देते हैं, जैव विविधता में योगदान करते हैं। यह पारिस्थितिक स्थिरता आदिवासी समुदायों के पारंपरिक ज्ञान के साथ अच्छी तरह से मेल खाती है, जिससे तसर रेशम उत्पादन ग्रामीण अर्थव्यवस्था में दीर्घकालिक योगदानकर्ता बन जाता है।

हालांकि, तसर रेशम उत्पादन को बाजार में अस्थिरता, ऋण तक पहुंच की कमी और तैयार उत्पादों के लिए सीमित बाजार संपर्क जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। नीतिगत हस्तक्षेप, बेहतर बुनियादी ढांचे और विस्तारित बाजार पहुंच के माध्यम से इन चुनौतियों का समाधान करने से तसर रेशम उत्पादन में शामिल लोगों की आर्थिक लचीलापन बढ़ सकता है।

चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिले में तसर रेशम उत्पादन एक परिवर्तनकारी आर्थिक गतिविधि साबित हुई है, जो इसमें शामिल समुदायों के लिए एक व्यापक आर्थिक उत्थान प्रदान करती है। निरंतर समर्थन और रणनीतिक हस्तक्षेप के साथ, यह उद्योग आगे विकास के लिए वादा करता है, जो क्षेत्र में ग्रामीण आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

तसर रेशम उत्पादन का आर्थिक योगदान:

तसर रेशम उत्पादन चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिले में एक महत्वपूर्ण आर्थिक शक्ति है, जो आय का एक स्थिर स्रोत प्रदान करता है जो खेती और वानिकी जैसे अन्य ग्रामीण आय स्रोतों का पूरक है। यह मौसमी गतिविधि रेशमकीट के जीवन चक्रों के साथ संरेखित होती है, जो समय-समय पर आय प्रदान करती है जो घरेलू खर्चों को पूरा करने में मदद करती है। बुनियादी ढांचे और सरकारी सहायता के विस्तार के साथ, कुछ परिवार रेशमकीट पालन और प्रसंस्करण के कई चक्रों में भाग लेकर साल भर उत्पादन में बदलाव करने में सक्षम हुए हैं। तसर रेशम उत्पादन से होने वाली अतिरिक्त आय परिवारों को गरीबी कम

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper ©2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group-I) Journal Volume 12 , Iss1, 2023

करने, खाद्य सुरक्षा में सुधार करने और बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा में निवेश करने में मदद करने में महत्वपूर्ण साबित हुई है।

यह उद्योग रेशमकीट पालन, कोकून प्रसंस्करण, कताई और बुनाई में भूमिकाओं के माध्यम से प्रत्यक्ष रोजगार पैदा करता है, जो श्रम-गहन है और महिलाओं और आदिवासी समुदायों के लिए फायदेमंद है, जो पारंपरिक रूप से सीमित रोजगार के अवसरों का सामना करते हैं। तसर रेशम उत्पादन का लचीलापन उन्हें पारिवारिक आय में योगदान करते हुए घरेलू जिम्मेदारियों को संतुलित करने की अनुमति देता है। इसके अतिरिक्त, आदिवासी समुदाय रेशम उत्पादन को सांस्कृतिक रूप से संगत आर्थिक गतिविधि पाते हैं, जो वन पारिस्थितिकी तंत्र और देशी पौधों की खेती के उनके पारंपरिक ज्ञान के साथ संरेखित है। इन जिलों में उत्पादित तसर रेशम अपनी बनावट, स्थायित्व और अद्वितीय उपस्थिति के लिए अत्यधिक मूल्यवान है, जो स्थानीय और राष्ट्रीय दोनों बाजारों में महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराता है।

तसर रेशम उत्पादन से होने वाली आय का स्थानीय अर्थव्यवस्था पर गुणक प्रभाव पड़ता है, जिससे अन्य व्यवसायों और सेवाओं में वृद्धि को प्रोत्साहन मिलता है। घरेलू आय में वृद्धि से समुदाय के भीतर वस्तुओं और सेवाओं पर अधिक खर्च होता है, जिससे स्थानीय खुदरा विक्रेताओं, स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं और शैक्षिक सेवाओं को लाभ होता है। तसर उत्पादन से जुड़ी सामग्री, उपकरण और श्रम की मांग संबंधित उद्योगों के लिए अवसर पैदा करती है, जैसे कि उपकरण, पैकेजिंग और परिवहन सेवाएँ बनाने वाले उद्योग। ग्रामीण आजीविका पर **सामाजिक-आर्थिक प्रभाव:**

तसर रेशम उत्पादन ने रेशम उत्पादन से आय में वृद्धि के माध्यम से चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिले के परिवारों के जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार किया है। इसने परिवारों को बेहतर आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा में निवेश करने की अनुमति दी है, जिससे बच्चों के बीच नामांकन दर और शिक्षा प्राप्ति में वृद्धि हुई है। स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच में भी सुधार हुआ है, जिससे परिवारों को अधिक आसानी से चिकित्सा सहायता लेने और बेहतर समग्र स्वास्थ्य मानकों को बनाए रखने में मदद मिली है।

तसर रेशम उत्पादन ने ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने और हाशिए के समूहों, विशेष रूप से आदिवासी समुदायों के बीच सामाजिक समावेश को

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper ©2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group-I) Journal Volume 12 , Iss1, 2023

बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रेशम उत्पादन के काम के लचीलेपन की बदौलत महिलाओं को अपने घरों और समुदायों में वित्तीय स्वतंत्रता और मजबूत आवाज़ मिली है। गैर सरकारी संगठनों और सहकारी समितियों की पहल ने उनकी सामाजिक स्थिति को मजबूत किया है, महिलाओं के कौशल को बढ़ाया है एवं सामुदायिक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भागीदारी को प्रोत्साहित किया है।

तसर रेशम उत्पादन उद्योग ग्रामीण आबादी के बीच कौशल विकास और ज्ञान हस्तांतरण में भी सहायक है। सरकारी एजेंसियों, गैर सरकारी संगठनों और सहकारी समितियों द्वारा कार्यान्वित प्रशिक्षण कार्यक्रम रेशमकीट पालन, कोकून प्रसंस्करण और बुनाई तकनीकों से संबंधित तकनीकी कौशल में सुधार पर ध्यान केंद्रित करते हैं। प्रतिभागियों को रेशम उत्पादन, कीट प्रबंधन और संधारणीय खेती में सर्वोत्तम प्रथाओं के बारे में बहुमूल्य ज्ञान प्राप्त होता है, जिसे अन्य कृषि प्रयासों में लागू किया जा सकता है। यह ज्ञान हस्तांतरण न केवल व्यक्तिगत प्रतिभागियों को ऊपर उठाता है, बल्कि सामुदायिक लचीलापन भी मजबूत करता है, क्योंकि साझा सीख स्थानीय उत्पादकों के बीच सहयोग और नवाचार को बढ़ावा देती है।

चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिले में ग्रामीण आजीविका पर तसर रेशम उत्पादन का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव पड़ता है, जो जीवन स्तर में पर्याप्त सुधार, महिलाओं को सशक्त बनाने और सामाजिक समावेश को बढ़ावा देने में योगदान देता है। कौशल विकास और ज्ञान हस्तांतरण पर उद्योग का ध्यान यह सुनिश्चित करता है कि ग्रामीण समुदाय आर्थिक चुनौतियों से निपटने और अवसरों को जब्त करने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हैं।

निष्कर्ष:

चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिले में पारंपरिक उद्योग तसर रेशम उत्पादन, आय और रोजगार प्रदान करके ग्रामीण आजीविका को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। यह सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देता है, विशेष रूप से महिलाओं और हाशिए पर पड़े आदिवासी समूहों के बीच। किसान अपने जीवन स्तर में सुधार करते हैं, बेहतर शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच प्राप्त करते हैं, और अपने भविष्य में निवेश करते हैं। हालाँकि, उद्योग को पर्यावरणीय गिरावट, आर्थिक बाजार बाधाओं और अपर्याप्त संस्थागत समर्थन जैसी चुनौतियों का

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper ©2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group-I) Journal Volume 12 , Iss1, 2023

सामना करना पड़ता है। इसकी क्षमता को अधिकतम करने के लिए, प्रभावी नीति हस्तक्षेप, जैसे कि संसाधनों तक पहुँच में सुधार, प्रशिक्षण प्रदान करना और बाजार संबंधों को बढ़ाना, महत्वपूर्ण हैं। वन संरक्षण और जैव विविधता के अनुकूल कृषि पद्धतियों जैसी संधारणीय प्रथाएँ भी पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने और तसर रेशम उत्पादन की दीर्घकालिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक हैं। सही समर्थन और संधारणीय प्रथाओं के साथ, तसर रेशम उत्पादन ग्रामीण आजीविका को दीर्घकालिक लाभ प्रदान करते हुए और क्षेत्र में व्यापक आर्थिक विकास में योगदान करते हुए फल-फूल सकता है।

संदर्भ:

- *Banerjee, S., & Bhattacharjee, T. (2022). Economic impact of Tasar sericulture on women's empowerment and social inclusion. Social Science Review, 24(2), 146-159.*
- *Bhattacharya, R., & Devi, U. (2013). Economic impact of Tasar sericulture on rural households in Eastern India. Journal of Rural Studies, 29(4), 115-128.*
- *Bhowmik, D., & Das, K. (2019). Tasar sericulture and income diversification for rural households in Central India. Journal of Development Economics, 61(5), 213-226.*
- *Chakraborty, P., & Basu, P. (2016). Skill development in Tasar sericulture and its impact on rural livelihoods. Journal of Agricultural Extension and Rural Development, 8(3), 44-55.*
- *Chakraborty, S., & Dutta, A. (2018). Role of women in the Tasar silk industry: A case study of tribal communities in Chhattisgarh, India. Journal of Gender Studies, 33(1), 89-104.*
- *Choudhury, A., & Das, N. (2020). Opportunities and challenges in Tasar silk value chain: A case study of Assam, India. International Journal of Entrepreneurship and Innovation Management, 4(1), 78-92.*
- *Das, A., & Basu, S. (2018). Role of self-help groups in women's empowerment through Tasar silk production: A case study of Odisha, India. Community Development Journal, 42(4), 421-435.*
- *Das, S. (2018). Empowerment of women through Tasar silk production in India. Gender and Development, 26(3), 301-315.*
- *Dasgupta, A., & Mukherjee, D. (2021). Technological innovations in Tasar silk production: A review of recent trends. International Journal of Innovation and Technology Management, 8(3), 145-160.*
- *Gulrajani, M. L., Agarwal, S., & Agarwal, R. (1999). Biopolishing of different varieties of Tasar silk. Indian Journal of Fibre and Textile Research, 24(3), 226-228.*
- *Gupta, N., & Choudhury, R. (2020). Government interventions in Tasar sericulture and rural income generation. Journal of Policy Studies, 22(1), 99-111.*
- *Mahapatra, S. (2021). Economic analysis of Tasar silk production in tribal communities of Odisha. Journal of Rural Economics, 18(1), 45-60.*
- *Mukhopadhyay, D., & Das, S. (2021). Opportunities for youth employment in the Tasar silk industry: Evidence from a survey in Bihar, India. Journal of Youth Studies, 29(1), 67-82.*
- *Pal, S., & Mukherjee, R. (2020). Value addition and marketing strategies for Tasar silk products: Insights from a study in Madhya Pradesh, India. Journal of Fashion Marketing and Management, 17(3), 245-260.*
- *Patra, S., & Sen, D. (2020). Impact of climate change on Tasar silk production: Evidence from field surveys in Jharkhand, India. Climate Change Economics, 15(4), 567-582.*

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper **©2012 IJFANS. All Rights Reserved,** **UGC CARE Listed (Group-I) Journal Volume 12 , Iss1, 2023**

- *Prasad, R., & Kumar, S. (2021). Ecological and economic impacts of Tasar sericulture in forested regions. Ecological Economics Journal, 37(3), 179-192.*
- *Roy, P., & Gupta, S. (2019). Role of self-help groups in promoting Tasar silk production: A case study of West Bengal. International Journal of Community Development, 12(2), 167-182.*
- *Saha, A., & Dasgupta, S. (2018). Market dynamics and consumer preferences for Tasar silk products: A study in urban areas of India. Journal of Marketing Research, 42(3), 321-335.*
- *Sharma, M., & Singh, A. (2018). Comparative analysis of Tasar and Mulberry sericulture's economic impacts on rural communities. International Journal of Sericulture, 15(1), 53-66.*
- *Sharma, P., & Das, M. (2019). Policy interventions for promoting Tasar silk industry: Lessons from other silk-producing countries. Journal of Policy Analysis and Management, 29(2), 201-215.*
- *Sinha, P., & Roy, D. (2023). Value chain analysis of Tasar sericulture: From production to distribution. Journal of Agricultural Economics and Development, 29(6), 231-245.*
- *Sundaram, S. R., & Kumar, V. (2015). Social and economic benefits of Tasar sericulture in tribal areas of India. Indian Journal of Sericulture, 42(2), 87-98.*